पंचम अध्याय

विवेच्य नाटकों में काम-चेतना

''पंचम आध्याय''
: ''विवेच्य नाटकों में प्रस्तुत काम-चेतना'' :

: विषय प्रवेश :

किसी भी देश का पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन उस देश के स्त्री-पुरूष संबंध को केंद्र में रखकर होता चला आया है । समय की गति के साथ समाज की परिवर्तनशील वृत्ति के कारण स्त्री-पुरूष संबंधों में परिवर्तन होता रहा है । पुरूषों के साथ संम्बन्धों के अनेक रूप हैं । जैसे पिता-पुत्री, भाई-बहन, देवर-भाभी आदि । किन्तु स्त्री - पुरूष संबंध इन शब्दों का सामन्यत: अर्थ 'काम संबंधों' के अर्थ में प्रचलित है । अत: हमने अपने शोध में उपर्युक्त पदावली का प्रयोग 'काम संबंधों' के अर्थ में ही प्रयुक्त किया है ।

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत 'काम' शब्द का अर्थ, परिभाषा, स्त्री-पुरूष काम-संबंधों का मनावैज्ञानिक कारण तथा सुरेंद्र वर्मा के विवेच्य नाटकों में दिखायें स्त्री-पुरूष काम-संबंधों का यहाँ साधार विवेचन विश्लेषण प्रस्तुत हैं ।

5.1 'काम' शब्द का अर्थ

'काम' शब्द मूल रूप से संस्कृत भाषा का शब्द हैं । 'बृहत हिंदी कोश' के अनुसार इसका अर्थ '''इच्छा', 'चाह' या 'कामना' है ।''[1] 'नालंदा अध्ययन कोश' के अंतर्गत 'काम' का साधारण अर्थ है - 'कर्म' या 'कार्य' और कोशगत अर्थ ती प्रकार से बताया गया है - 1. 'इच्छा', 'चाह' अथवा 'कामना', 2. 'विषय सुख की इच्छा, 3. चतुर्वर्ण में से एक । इस प्रमुख तीन अर्थों के आलावा 'काम' शब्द - 'संबंध', 'सरोकार', 'व्यवसाय', 'प्रयोजन', 'कारागरी', 'व्यवहार', आदि अर्थो में प्रयुक्त होता है ।''[2] 'आधुनिक हिंदी शब्द कोश' के अनुसार काम का अर्थ है ''इष्ट या वासना की सिद्धि के लिए मन में उठनेवाली इच्छा, लालसा, कामदेव, अभिलाषा, विषयभोग ।''[3] 'नालंदा विशाल शब्दसागर' में

---

1. *कलिका प्रसाद - ब्रहत हिंदी कोश, पृष्ठ - 269*
2. *पुरूषोत्तम नारायन आग्रवाल - नालंदा आद्यतन कोश, पृष्ठ - 146*
3. *डॉ. गोविंद चातक - आधुनिक हिंदी शब्द कोश, पृष्ठ - 146*

'काम' शब्द का अर्थ इस रूप में प्रयुक्त है - ''इच्छा, मनोरथ, महादेव, कामदेव, सहवास की इच्छा, इन्द्रियों को अपने-अपने विषयों की ओर प्रवृत्त करना (कामशास्त्र) ।''[1] 'कामसूत्र' में 'काम' से तात्पर्य उस तीव्र इच्छा से है जो स्त्री और पुरूष के संभोग से प्राप्त होनेवाले सुखानुभव के लिए होता है ।''[2]

5.2 'काम' शब्द की परिभाषाएँ :

1. 'ऋग्वेद' के अनुसार - ''कामस्तदग्ते समवर्ततााधि मनसो रेत: प्रथम यदासीत । अर्थात - मन या बुध्दि का रेतम काम है । रेत का अर्थ है -'मूल तत्व' । यही तत्व स्त्री-पुरूष को परस्पर आकर्षित करता हैं ।''[3]

2. 'ऐतरेय उपनिषद' के अनुसार - ''कामको सन्निहित विजयाकांक्षा तृष्णा । अर्थात - अप्राप्त विषय की आकांक्षा या तृष्णा को 'काम' कहते हैं ।'' [4]

3. कामशास्त्र के आचार्य वात्सायन काम की विष्तृत व्याख्या इस प्रकार बताते हैं - ''आत्मा से युक्त मन के द्वारा कर्ण, नेत्र, जिव्हा, नासिका एवं त्वचा आदि पंचइन्द्रियों का अपने-अपने विषय में प्रवृत्त होकर प्राण की आनंद प्राप्ति का नाम 'काम' हैं ।''[5] वात्सायन 'काम' की स्थूल व्याख्या करते हुए लिखते है - ''स्पर्श विशेष विषये च्वस्था भिमानिक सुखानुविद्या फलवत्यर्थ प्रतीति: प्राधान्यात्काम: ।''[6] इसका अर्थ है - चुम्बन, अलिंगन, कपोल, स्तन, नितंब आदि अंगों से प्राप्त होनेवाले सुख को 'काम' कहते हैं ।

4. डॉ. नगेंद्र 'काम' के संदर्भ में लिखते हैं - ''सांसारिक इच्छाओं की, विषयों की, वासनाओं की पूर्ति से और विशेषत: स्त्री-पुरुष के परस्पर प्रेम, संगम, सहयोग और उपभोग से जिस सुख और आनंद का अनुभव होता है उसे 'काम' कहते हैं ।''[7]

---

1. *संपा. श्री. नवलजी - नालंदा विशाल शब्द सागर, पृष्ठ - 226*
2. *वात्स्यायन - कामसूत्र (हिंदी अनुवाद : कविराज विपिनचंद्र बंधु), पृष्ठ - 20*
3. *ऋग्वेद - 10 - 129-4.*
4. *ऐतरेय उपनिषद - 3-1.2.*
5. *वात्स्यायन - कामसुत्र, पृष्ठ - 1-2-110*
6. *वात्स्यायन - कामसुत्र, पृष्ठ - 1-2-112*
7. *डॉ. नगेंद्र - भारतीय सौंदर्य की भूमिका, पृष्ठ - 179*

5.3 'काम' शब्द की व्यापकता :

आज 'काम' का कार्य क्षेत्र काफी व्यापक समझा जा रहा है । इतना व्यापक कि मनुष्य के हर प्रकार के व्यवहार का मूलाधार काम माना जाने लगा है । काम का पूरा विषय वास्तव में कितना गूढ एवं इसका क्षेत्र कितना विशाल है यह इसी से प्रकट होता है कि प्रधान मनीषियों ने इसकी तुलना समुद्र से की थी । जैसे -

"समुद्र इव हि काम: ।
नैनहि कामस्यान्तोऽस्ति न समुद्रस्य ॥"[1]

भारतीय चिन्तकों ने काम की प्रबलता एवं उसकी नियमन शक्ति का प्रच्युर मात्रा में उल्लेख किया है । यदि साहित्य का सर्वेक्षण किया जाए तो प्रत्येक साहित्य प्रच्युरता से 'काम-भाव' से स्पंदित मिलेगा । साहित्य सृष्टि का मूल प्रेरक, पर्याप्त सीमा तक, नर-नारी का पारस्पारिक आकर्षण ही है । आधुनिक हिंदी नाटक इसी तथ्य का साक्ष प्रस्तुत करता है । काम के विषय की व्यापकता के परिप्रेक्ष में जब हम मानवीय काम-संबंधों पर विचार करतें हैं तो हमें यह जानकर विशेष आश्वर्य नहीं होता कि देशकाल की विशिष्ट परिस्थितियों या व्यक्तियों की अपनी-अपनी इच्छाओं या आवश्यकताओं के अनुसार काम-संबंध की मान्यताओं में अनेक परिवर्तन होते रहे हैं ।

स्त्री-पुरूष की पारस्पारीक आनुरक्ति सहज- स्वाभाविक और प्रबलतम हैं । नर-नारी सम्बन्धों का मूलाधार है कामाकर्षण, जिसे प्राचीन शास्त्र-चिंतकों ने और आधुनिक साहित्यिकों और मनोवैज्ञानिकों ने एक व्यापक मनोवृत्ति के साथ उसी रूप में स्वीकार किया है । "विवाह के पवित्र बंधन में बँधकर, उदात्त प्रेम की उत्ताल तरंगों में लीन होकर पति-पत्नी संभोग से समाधि की ओर बढतें हैं और अन्तत: मुक्तिलाभ करते हैं । संभवत: इसी कारण प्राचीन चिंतकों ने काम को पुरुषार्थ-चातुष्ट्य में स्थान देकर धर्म सेवित काम को मोक्ष से संवलित किया है ।"[2] इस प्रकार काम की व्यापकता और गहराई स्पष्ट रूप में दिखायी देती है ।

5.4 'काम' महत्त्व :

'काम' का महत्त्व 'श्री तुलसी महात्म्य' ग्रंथ में एक कथा के माध्यम से स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है ।

---

1. *तैतरीय ब्राह्मण 2.2.2.6 (सूर्यकांत - वैद्यक कोश), पृष्ठ -90*
2. *डॉ. सुंदरलाल कथूरिया - समसामायिक हिंदी नाटक बहु आयामी व्यक्तित्व, पृष्ठ - 73*

प्राचीन काल में जालंधर नाम का एक महापराक्रमी, बलवान योद्धा था । उसने युद्ध में सभी देवताओं को पराजीत करके उनके वैभव, सुख-साधनों पर अपना कब्जा बना लिया था । सब को हराकर वह अजिंक्य बन गया था । इसका प्रमुख कारण था कि उसकी पत्नी वृन्दा जो महापतिव्रता थी । उसके पावित्र्य के बलपर ही वह हर युद्ध में विजयी होता था । यह वरदान भी उसे देवताओं से ही मिला था कि जब-तक तुम्हारी पत्नी का पावित्र्य सही सलामत रहेगा, तब-तक तुम जीवित रहोगे । अत: इसी पावित्र्य के बलपर ही प्रत्येक युद्ध में देवताओं को भी पराजीत कर रहा था । देवताओं का छल और उनकी हुइ हालत देखकर जालंधर का नाश करने के लिए श्री विष्णु ने अपनी युक्ति से एक कपट योजना निर्माण की । इसके लिए उसने 'काम' का सहाय्य लिया और वृन्दा का पावित्र्य हनन करने की योजना बनायी ।

युद्ध के समय जालंधर का रणांगण में हुथी प्रत्यु दर्शाने के लिए श्री विष्णु ने दो बंदरों की साहयता से अपना सर वृन्दा के सामने रख दिया । सामने जालंधर का मृत शरीर देखकर वृन्दा शोख करने लगी । उस वक्त एक साधु ने संजीवन मंत्र के द्वारा श्री विष्णु को जीवितकिया । जालंधर को जीवित देखकर वृन्दा को बहुत आनंद हुआ और उसने उसी आवेश में श्री विष्णु को आलिंगन दिया । कुछ दिनों तक जालंधर के वेश में विष्णु वृन्दा के घर रहें । उन दिनों में इन दोनों के बीच शारीरिक संबंध बन गए । विष्णु के साथ शारीरिक काम संबंध रखने के कारण वृन्दा का पावित्र्य नष्ट हो गया । उसी वक्त युद्ध के दरमियान जालंधर की रणांगण में मृत्यु हो गयी ।

प्रस्तुत कथा 'काम' के संबंध में जितनी महत्त्वपूर्ण हैं उतनी ही ली गयी है । इस प्रकार 'कामशास्त्र' की सहायता से भगवान विष्णु ने देवताओं के सर्वनाश पर उठे जालंधर रूपी राक्षस का अंत किया । इससे 'काम - शास्त्र' का महत्त्व और भी स्पष्ट रूप में उजागर होता हैं ।

5.5 स्त्री-पुरुष काम-संबंधों का मनोविज्ञान :

वस्तुत: मनोविज्ञान का क्षेत्र बहुत व्यापक है जिसके अंतर्गत यौन-मनोविज्ञान भी आता है । यौन-मनोविज्ञान को काम मनोविज्ञान के नाम से भी पुकारा जाता है । "काम का संबंध प्राय: सभी इंद्रीयों से है और उनके अधिष्टता मन हैं । इसलिए इसे मनसिज, मनोभव आदि नामों से पुकारा गया हैं ।"[1] स्त्री पुरुष का एक-दूसरे के प्रति आकर्षण होता है जो दोनों को एक-दुसरे की ओर आकर्षित करता है । किंतु अब

---

1. *डॉ. नरेंद्रनाथ त्रिपाठी - साठोत्तरी हिंदी नाटको में स्त्री-पुरुष संबंध, पृष्ठ - 45*

समय के अनुसार स्त्री-पुरुष संबंधों का आधार भी परिवर्तित होता रहा है । वैदिक युग में स्त्री स्वतंत्रतापूर्वक इच्छित पुरुष का वरण करती थी । वही स्त्री आगे मध्ययुग में तृप्ति एवं भोग की वस्तु बन गयी । किंतु स्वतंत्रता के पश्चात स्त्री-पुरुष संबंधों में क्रांतिकारी परिवर्तन हुये दिखायी देतें हैं । पश्चिमी सभ्यता के संपर्क से उन्मुक्तता एवं व्यभिचारी वृत्ति के विकास की वृद्धि स्पष्ट दिखायी देती हैं ।

स्त्री पुरुषों का एक - दूसरे के प्रति जो आकर्षण हैं, इन चुम्बकीय संबंधों का कारण शारीरिक सौंदर्य, मनोहारी व्यवहार एवं प्यार भरी बातें हैं । वैसे देखा जाए तो स्त्री-पुरुषों के बीच कई संबंध हैं, जैसे - देवर-भाभी, भाई - बहन, पिता - पुत्री और माँ - बेटा आदि किंतु वर्तमान काल में स्त्री-पुरुष संबंध सामान्यत: काम संबंधों के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है ।

सभ्यता के प्रारंभ में स्त्री-पुरुष संबंधों का आधार काम-भावना ही थी परंतु आधुनिक युग में बदलते जीवन मूल्यों के साथ-साथ यौन संबंधों का आधार भी बदल रहा है । डॉ. लक्ष्मीराय के शब्दों में - "विवाह की सीमा के बाहर यौन-तृप्ति या विवाह से पूर्व यौन संबंध अब पहले की भाँति चौकाते नहीं हैं । फलत: स्वैरिता, परस्त्रीगमन, उन्मुक्त प्रेम तथा प्रयोगात्मक विवाह जैसी संकल्पनाएँ जन्म ले रही हैं ।"[1]

स्त्री-पुरुष संबंधों का मुख्य कारण प्रेम हैं । एक दृष्टि से स्त्री-पुरुष के बीच प्रेमभाव, काम-भाव काही परिष्कृत रुप है । आ. रजनीश भी प्रेम का उद्भव काम से मानते हैं ।"[2] प्रेम विहीन काम संबंधों के बारे में डॉ. प्रमिला कपुर लिखती हैं - "आधुनिक युग में प्रेम स्त्री-पुरुष के मध्य स्थायी भाव नहीं है । नारी विवाह से पूर्व ही यह निश्चित्र कर लेती है कि उसे किससे कितना लाभ होगा । वह इसी आधार पर संबंध स्थापन का प्रयत्न करती हैं ।"[3]

काम-तृप्ति प्राप्त करने के लिए अनेक पुरुष और नारियाँ बिना विवाह किए काम-संबंध रख लेते हैं अथवा अपने विवाहित साथ के होते हुए भी दूसरे साथी से काम संबंध स्थापित करतें हैं । प्रस्तुत शोध अध्याय के अंतर्गत सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में चित्रित स्त्री-पुरुष के काम - संबंध या विषय लैंगिक संपर्कों का निम्न उपवर्गों में वर्गिकृत कर विवेचन विश्लेषण प्रस्तुत है -

1. विवाहपूर्व काम-संबंध ।
2. वैवाहिक काम-संबंध ।

---

1. *डॉ. लक्ष्मीराय - आधुनिक हिंदी नाटक : चरित्र सृष्टि के आयाम, पृष्ठ - 432*
2. *आ. रजनीश - संभोग से समाधि की ओर, पृष्ठ - 57*
3. *डॉ. प्रमिला कपुर - विवाह, सेक्स और प्रेम, पृष्ठ - 82 एवं 177*

3. विवाहेतर काम-संबंध।
4. उन्मुक्त प्रेम-संबंध ।
5. समाजमान्यत विवाहेतर काम-संबंध ।

5.5.1 विवाह-पूर्व काम-संबंध :

वास्तव में स्त्री - पुरुष के काम - संबंधों के दो प्रमुख कारण होते हैं - संतानोत्पत्ति तथा आनंदप्राप्ति । विवाह पूर्व स्त्री-पुरुष संबंधों का एक मात्र कारण आनंदप्राप्ति ही हो सकता है । पाश्चात्य संस्कृति के कारण यौन संबंधों के आधार में भी आज काफी परिवर्तन होता नजर आ रहा है । पाश्चात्य देशों में विवाह के बंधन इतने कठोर नहीं हैं इसलिए उन देशों में काम संबंध को लेकर और स्वैराचार प्रच्युर मात्रा में दिखायी देता है । भारतीय समाज में भी विवाह - पूर्व काम - संबंधों को मान्यता नहीं हैं । लेकिन पाश्चात्यों के प्रभाव के कारण आज की युवा पीढी चोरी - छिपे इन संबंधों की गड्डि पर सवार हैं । जो स्त्री-पुरुष चोरी - छिपे इन संबंधों में उलझ जाते हैं उनमें पुरुष भले ही बेदाग निकल जाए, स्त्री के जीवन पर इस बात का असर हो जाता है । अत: "भिन्न-भिन्न सर्वेक्षणों से ज्ञात होता है कि भारत में विवाहपूर्व काम संबंध गुप्त अथवा प्रकट रूप में है, अवश्य ।"[1]

सुरेंद्र वर्मा ने 'शकुंतला की अंगूठी' नाटक में विवाह पूर्व काम-संबंधों को प्रस्तुत किया है । प्रस्तुत नाटक का नायक कुमार 'आभिज्ञान शाकुंतल' नाटक का निर्देशन कर रहा है । वह खुद दुश्यंत है और कनक नामक एक लडकी 'शकुंतला' बन गयी हैं । नाट्य रिहर्सल के दरमियान इन दोनों में प्यार होता है और उसका परिवर्तन काम-संबंधों में हो जाता है । उसका एक उदाहरण प्रस्तुत है -

"कुमार : यह कोमल अधर । जिसने आजतक किसी तरह का दंश नहीं जाना । अब हल्के-हल्के कांप कर । मुझ प्यासे को रसपान की अनुमति दे रहे हैं ... तुम्हारा उपकार इतना ही है कि तुमने मुझे अपना मुँह सुँघ लेने दिया । भौरें का संतोष केवल कमल की सुगंध पाकर ही हो जाता है ।

कनक : और संतोष न हो, तो वह क्या करता है ? ... (कुमार कनक को अपनी बाहों में ले लेता है । उसे चुमने को झुकता है । कनक की बाहें उसे घेर लेती हैं ।) अंधकार ...."[2]

---

1. *डॉ. नरेंद्रनाथ त्रिपाठी - साठोत्तरी हिंदी नाटकों में स्त्री - पुरुष संबंध, पृष्ठ - 48*
2. *सुरेंद्र वर्मा - शकुंतला की अंगूठी, पृष्ठ - 69*

5.5.1.1 प्रेम और काम :

प्रेम और काम अलग-अलग भाव होते हुए भी कभी-कभी इतने एक हो जाते हैं कि उनका अलग रूप में विश्लेषण करना बहुत ही कठिन हैं । प्रेम और काम के संदर्भ में आचार्य रजनीश का मत दृष्टव्य हैं - "सच्चाई यह है कि प्रेम की सारी यात्रा का प्राथमिक बिंदु काम है । प्रेम का जो विकास है वह काम की शक्ति का ही ट्रांसफारमेशन है ।"[1] शुद्ध काम भावना ही स्त्री-पुरुषों के संबंधों के मूल में दैहिक स्तरपर आनंदप्राप्ति का उद्देश्य रख जाती हैं । उसके लिए जिम्मेदार हैं - कॉलेज जीवन और पाश्चात्य संस्कृति । कॉलेज और विश्वविद्यालयों में 'गर्लफ्रेंड' और 'बॉयफ्रेंड' रखने की प्रथा ही चल पडी हैं । इस कारण छात्र-छात्राओं के काम संबंधों के अतिरिक्त कभी-कभी यह भी नजर आता है कि आध्यापक और छात्राओं के बीच भी उक्त प्रकार के संबंध स्थापित होते जा रहे हैं । आर्थिक विवशता, घूमना-फिरना तथा सुख एवं आनंदप्राप्ति के लिए आधुनिक लडकियाँ आगे-पीछे नहीं देखती हैं । सुरेंद्र वर्मा के 'द्रौपदी' नाटक में दो कॉलेज जीवों के काम-संबंधों का सुंदर उदाहरण मिलता है जिसकी मंजिल सिर्फ आनंद प्राप्ति ही है । प्रसतुत नाटक से यह स्पष्ट होता है कि युवा वर्ग के यौन - आकर्षण का प्रमुख कारण अश्लिल साहित्य और एल.एस.डी. का प्रयोग है । युवक-युवतियाँ अपने प्रेमी-प्रेमिकाओं से मिलने के लिए एक्स्ट्रा क्लासेस के बहाने घर से जाते हैं । डॉ. लक्ष्मीराय प्रस्तुत नाटक में स्थित युवा पात्रों के संदर्भ में अपना मंतव्य स्पष्ट करते हुए कहते हैं - "राजेश और अनील स्त्री-पुरुष संबंधों को शरीर धर्मी प्रेमतक ही सीमित मानते हैं ।"[2]

उपर्युक्त तथ्य की पुष्टि राजेश के इस कथन से होती है, जब वह अलका से यौन संबंधों का आनुरोध करता हैं - "एक तरफ तो कहती हो मुझे इतना ढेर सारा प्यार करती हो पर मेरी इतनी जरा - सी बात नहीं मान सकती ? (विराम) - मेरे पास वो चीज है । - तुम बेकार डर रही हो तुम्हें कुछ नहीं होगा । (विराम) सब लोग करते हैं, मगर तुम हो कि फिजुल की जिद पकड के बैठ गई हो । (विराम) पाँच मिनट का तो सवाल है ।"[3] अलका की माँ भी अपनी बेटी को प्रेम - संबंधों के दाँब-पेच सिखाने में हिचकिचाती नहीं है । जैसे - "राजी-खुशी देती जा उसे जो जो कुछ वो चाहता है ।"[4] और आगे अपनी रति-सहस्थता की ज्ञान को भी पेश करती है । - "और ऐसे तो तू कभी नहीं बाँधती । ... और जब आयी थी तो कैसी मसली हुई थी पता है, ये तेरा हफ्ता सेफ नहीं हैं ?"[5]

---

1. *आ. रजनीश - संभोग से समाधि की ओर, पृष्ठ - 24*
2. *डॉ. लक्ष्मीराय - आधुनिक हिंदी नाटक चरित्र सृष्टि के आयाम, पृष्ठ - 421*
3. *सुरेंद्र वर्मा - द्रौपदी, पृष्ठ - 97*
4. *सुरेंद्र वर्मा - द्रौपदी, पृष्ठ - 83*
5. *सुरेंद्र वर्मा - द्रौपदी, पृष्ठ - 83*

इस कथन द्वारा स्पष्ट होता है कि युवा वर्ग के साथ पुरानी पीढी की स्त्रियाँ भी काम - संबंधों में कितनी अधिक रूचि लेती हैं । सुरेखा ने अपनी पुत्री की गतिविधियों पर रखी सूक्ष्म दृष्टि द्वारा यह स्पष्ट होता है ।

उपर्युक्त उदाहरणों से निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि युवक-युवतियों को इतनी स्वच्छंदता प्राप्त हो गयी है कि वे जहाँ-चाहे आ जा सकते हैं । परिणाम स्वरूप इस कालावधि में वे स्वतंत्र रूप से काम - संबंध स्थापित कर सकते हैं, जिसका घरवालों को बिल्कुल पता नहीं होता । अलका, राजेश, वर्षा और अनील आदि इस के सशक्त उदाहरण हैं ।

5.5.1.2 विवाहपूर्व काम संबंधों में रूचि :

सुरेंद्र वर्मा ने अपने कुछ नाटकों में विवाहपूर्व काम-संबंधों में रूचि लेनेवाले पात्रों का घटना एवं प्रसंग के अनुरूप चित्रण किया है । उनका 'आठवाँ सर्ग' नाटक इसका उदाहरण है । प्रस्तुत नाटक में दो युवा स्त्री पात्र है जो अभी भी अविवाहित हैं । उनको काम-संबंधों में कितनी दिलचस्पी है उसका पता इन प्रसंगों के द्वारा पाठकों को चलता हैं । प्राय: देखा जाता है कि युवावस्था में ही काम - चेतना अधिक से अधिक उत्तेजित होने लगती है । अनसूया और प्रियंवदा के वार्तालाप द्वारा उक्त बात स्पष्ट होती है, -

"अनसूया : प्रियंवदे ! निगोडी सारिका की करतूत तो देख!
(पात्र नीचे रख देती है ।)

प्रियंवदा : क्यों, क्या हुआ ?

अनसूया : मैं आहार देने गयी थी । ज्यों ही बिंबाफल पिंजरे में डाला, मुँहजली ने ऊँगली काट ली ... (हाथ सामने कर के) तनिक देख तो कैसे दंतचिन्ह उभर आए हैं !

प्रियंवदा : (देखती है, कुटिल मुस्कान से) तो इसमें बुरा क्या है, सखि ?

अनुसया : क्या मतलब ?

प्रियंवदा : ब्याह के बाद बडी आसानी होगी, अगर अभी से दंतक्षत का अभ्यास हो जाएगा तो !

अनुसया : (आँखें तरेरकर) तूने कौन-कौन से अभ्यास कर लिए हैं, पर उपदेश कुशल ?

प्रियंवदा : (अर्थपूर्ण स्वर में) उनकी आवश्यकता नहीं पडेगी, क्यों मैं दूसरों के अनुभवों से लाभ उठा रही हूँ ।"1

उपर्युक्त कथन से ज्ञात होता है कि प्रियंवदा स्त्री-पुरुष संबंधों में विशेष रूचि रखती हैं, उसको इन संबंधों का अच्छा ज्ञान भी है । प्रेमी किस प्रकार सांकेतिक भाषा में अपनी प्रेमिका को मिलन स्थल पर आने के लिए संकेत करता है, इसका उसे गहरा ज्ञान है । इस संदर्भ में वह एक घटना को अनसूया के सामने प्रस्तुत करती है कि श्रेष्टी के दूकान में एक सुंदर युवक ने उसे किस प्रकार से संकेत करके मिलन स्थलपर मिलने के लिए बुलाया है । प्रियंवदा के कथन से उस घटना का साक्षात्कार होता है -

"प्रियंवदा : (खिलखिलाती है ।) निकट आया और दूसरों की आँख बचाकर अपनी माला का एक पुष्प तोडा । फिर उसे अपने दाँतों में दबाकर ऊपर सूर्य की ओर संकेत किया ।

अनसूया : अर्थात ?

प्रियवंदा : (आश्चर्य से) अपनी राजधानी में दस साल की बच्ची भी जानती है और तू इसका अर्थ नहीं समझी ?

अनसूया : जब किसी ने मेरे साथ ऐसा किया तो मैं समझूँ ।

प्रियंवदा : सूर्य ढलने पर पुष्पदन्त के मंदिर में आना ।"2

इन दो प्रसंगों से यह स्पष्ट होता है कि विवाह पूर्व काम-संबंधों के अंतरंग बातों में प्रियंवदा पूर्ण रूचि लेती है । इस तरह विवाहपूर्व काम संबंध का उपयोग एक आनंद प्राप्ति के रूप में ही लिया जा सकता है ।

5.5.2 वैवाहिक स्त्री-पुरुष का काम-संबंध :

सभ्यता की शुरूआत में विवाह जैसी कोई व्यवस्था नहीं थी । स्त्री-पुरुष यौन संबंधों के लिए स्वातंत्र्य थे । संभावत: इसी कारण समाज में कलह एवं अस्थिरता थी । उदाहरण के लिए डॉ. नरेंद्रनाथ त्रिपाठी ने अपने ग्रंथ में आसाम का एक उदाहरण दिया है - "आसाम के एक आदिम कबीले वालों ने पादरियों के समझाने पर अपनी शयन शाला परिपाटी का परित्याग कर दिया था । इस परिपाटी के अनुसार

---

1. *सुरेंद्र वर्मा - आठवाँ सर्ग, पृष्ठ - 20*
2. *सुरेंद्र वर्मा - आठवाँ सर्ग, पृष्ठ - 62-63*

वहाँ के अविवाहित युवक-युवतियाँ रात्रि में एक सामुहिक शयन-स्थल पर सोते थे जहाँ स्वतंत्र रूप से वे यौन संबंध स्थापित कर सकते थे । प्रात: वे अपने परिवार में आकर रहते थे । इस परिपाटि के समाप्त होने के बाद ऐसा अनुभव किया जाने लगा कि उन युवक-युवतियों में तनाव एवं कुठाएँ घर कर गयी हैं और परिवार में उनका व्यवहार पहले जैसा नहीं हैं ।''[1] अत: इन्हीं दोषों को समाप्त करने के लिए विवाह जैसी परिकल्पनाएँ की गयी होगी । नर-मादा का पारस्पारिक आकर्षण सहज स्वाभाविक तो है ही, प्रबलतम भी हैं । मानव समाजने इस भाव को संयमित और उद्धिकृत करने के लिए विवाह संस्था की सृष्टि की है ।''[2]

प्रत्येक समाज में विवाह के उद्देश्य समान होते हैं । हिंदू संस्कृति धर्म को प्रमुख मानती हैं । हिंदू समाज के विवाह में धर्म का उद्देश्य प्रमुख है । काम मानव की तीव्रतम इच्छाओं में से एक है । जिसकी संतुष्टि विवाह के पश्चात ही आवश्यक है । विवाह कल्पना के मूल में यौन सम्बंध ही प्रमुख थे । ''विवाह और काम संबंध एक-दूसरे के पर्याय बन चुके हैं, भले ही काम-संबंध संतानोत्पत्ति के लिए हो या आनंद प्राप्ति के लिए, लेकिन है महत्त्वपूर्ण ।''[3] उद्देश्य कुछ भी क्यों न हो, काम-संबंध सिर्फ विवाहित पति-पत्नी में ही होना अनिवार्य हैं ।

सुरेंद्र वर्मा ने 'आठवाँ सर्ग' में पति-पत्नी के काम-संबंधों को बहुत ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है । नाटककार पति-पत्नी के वैध काम-संबंधों का उद्घाटन अनुचित नहीं मानता । 'आठवाँ सर्ग' में एक पति-पत्नी की प्रणय लीला का चित्रण है, जो अश्लील नहीं कहा जा सकता क्योंकि वह पूरी तरह देने और पूरी तरह पाने का संबंध है । नाटककार की यह मान्यता अनसूया के माध्यम से प्रकट होती है - ''ज्यों ही वह स्थल आया कि शयनागार में उमा और महादेव एक-दूसरे को पराजित करने पर तुले हुए थे । दोनों के केश छितरा गए, चन्दन पूछ गया, उमा की मेखला टूट गयी, लेकिन उनके साथ ... (अटक जाती है । खॉसकर) क्रीडा-खेली से महादेव का मन नहीं भरा ... ''[4] इस प्रकार से नाटककार ने पति-पत्नी के रूप में देवी-देवताओं के काम-संबंधों को भी प्रस्फुटित करने का प्रयास किया हैं ।

प्रस्तुत नाटक में पति-पत्नी की प्रणय लिला को उचित माननेवाले नाटककार, पति-पत्नी की रति - प्रक्रिया का चित्रण अनसूया एवं प्रियंवदा के माध्यम से इस प्रकार करता है । जैसे - ''गवाक्ष बंध,

---

1. *डॉ. नरेंद्र त्रिपाठी - साठोत्तरी हिंदी नाटकों में स्त्री-पुरुष संबंध, पृष्ठ - 47*
2. *डॉ. सुंदरलाल कथूरिया - समसामायिक हिंदी नाटक : बहुआयामि व्यक्तित्व, पृष्ठ - 73*
3. *डॉ. प्रमिला कपूर - प्रेम, विवाह और काम, पृष्ठ - 162*
4. *सुरेंद्र वर्मा - आठवाँ सर्ग, पृष्ठ - 38*

हल्का अंधेरा ! ... पलंग के पास कुल खाली चषक होंगे । उन पर दो युगल अधरों के स्पर्श, जैसे अभी तक कसमसा रहा है । ××× कुछ देर चुपचाप उस शैय्या को परखना । ... उस पर अधखिलि कलियाँ बिखरी होंगी ..... म्लान ... दोहरी हो चूँकि पंखुरियों को हल्के से छुना, तो दो शरीरों के तप्त दबाव का आभास होगा । ××× शुभ्र, श्वेत चादर पर यहाँ - वहाँ सिकुडने होंगी । ... एक ओर कुंरंटक पुष्पों की माला पडी होगी - प्रगाठ अलिंगन में मसली हुयी । ××× ... कुछ पल चुपचाप खडी रहना, तो धीरे-धीरे कुई ध्वनियाँ उभरेंगी । ××× वस्त्रों की सरसराहट .... आभूषणों की झंकार .... साँसों की तीव्रता ... बाहों काप कसाव । ××× देवि को सामने की ओर से देखोगी तो तुम्हें मालूम होगा कि उनका केशकलाप बिलकुल उलझ गया है ... उनकी मंद-मंथर गति में तृप्ति का मादक आलाप है । ××× देह का अंगराग ... माथे का तिलक ... आखों का अंजन ... अधरों का लाक्षसरस ... कपोलों का विशेसक ... वक्ष के पत्रभंग ... सब मिटे या अधमिटे हैं । क्योंकि ... कुछ को व्यग्र स्पर्शों नें सोख लिया । कुछ तो अलिंगनों की तरंगों में विलीन हुए । रहे-सहे तप्त चुंबनों में झुलार गए । ××× कुछ पास जाना, तो देखोगी कि उनकी देह पर कितने ही दंतक्षत और नखविन्यास हैं ।" [1]

प्रियंवदा के उपर्युक्त कथन द्वारा पति-पत्नी की रति क्रीडा का आभास स्पष्ट रूप से दिखायी देता है । 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' में नाटककार ने साधारण पति-पत्नी के काम-संबंधों पर प्रकाश डाला है । महत्तरिका के कथन द्वारा यह बात स्पष्ट होती है - "शारीरिक संबंधों की संख्या का कोई सामान्य नियम नहीं है । दम्पत्ति विशेष के अनुसार वे बदलती रहती है । ..... जहाँ तक हमारी बात है, ब्याह के बाद प्रारंभ में संख्या अधिक थी । अब घटकर स्थिर हो गयी है । सप्ताह में प्राय: तीन बार ... ।" [2]

इस प्रकार सुरेंद्र वर्मा ने उपर्युक्त नाटकों द्वारा वैवाहिक स्त्री- पुरुषों के काम - संबंधों को यथार्थ रूप से प्रस्तुत करने का एक सफल प्रयास किया है ।

5.5.3 विवाहेतर काम संबंध :

हमारा समाज पुरुष प्रधान होने के कारण मनुष्य ने विवाह पूर्व और विवाहपरांत भी काम-संबंध को बनाए रखने की सूविधाएँ खोज रखी हैं । पुरुष ने पत्नी के अतिरिक्त काम-संबंधों की पूर्ति के लिए नारी को

---

1. *सुरेंद्र वर्मा - आठवाँ सर्ग, पृष्ठ - 22-23-24*
2. *सुरेंद्र वर्मा - सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, पृष्ठ - 35*

उपपत्नी के रूप में, प्रेमिका के रूप में तथा वेश्या के रूप में भी अपनाया है । नारी भी अवसर मिलने पर पीछे नहीं हटती है । विवाहपूर्व की अपेक्षा विवाहोपरांत के काम-संबंधों की संभावत: अधिक रहती है । क्योंकि काम यह ऐसी भुख है जो बार-बार पुनरावृत्ति माँगती हैं । विवाहोपरांत काम का ज्ञान तो अवश्य ही अनुभव सिद्ध होता है जिसकी पूर्ति न होकर अन्य उपायों के द्वारा पूर्ति की जाती है । इन संबंधों को विवाहेतर काम-संबंध का नाम दिया जा सकता है । प्रस्तुत काम संबंध को निम्नांकित दो प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है -

1. पति के विवाहेतर काम-संबंध
2. पत्नी के विवाहेतर काम-संबंध

सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में उपर्युक्त दोनों प्रकार के स्त्री पुरुष काम-संबंधों का चित्रण मिलता है ।

5.5.3.1 पति के विवाहेतर काम-संबंध :

सुरेंद्र वर्मा ने 'द्रौपदी' नाटक में पति के विवाहेतर काम-संबंधों को दिखाने का सफलपूर्ण प्रयास किया है । सुरेखा के पति मनमोहन का अन्य औरतों के साथ भी काम-संबंध दिखाई देता है । इसका जिक्र नाटककार अंजना के माध्यम से करता है जो अपने बॉस मनमोहन के साथ रति-प्रक्रियाओं में लीन होकर भौतिक सुविधाओं को प्राप्त करती हैं । अंत में वह अपने इस जीवन से दु:खी होकर यह महसूस करने लगती है कि वह इस जीवन से थक चुकी है । वह कहती हैं - "इस रफ्तार का कहीं खात्मा नहीं, इस पागलपन से कभी छुटकारा नहीं । ××× पर अब मुझसे बरदाश्त नहीं होता ××× - बिना किसी सहारे के यह लंबी लडाई, चौबीस घंटों का यह नसों का तनाव, दिन-रात की दौड ××× महीने के छब्बीस दिन मैं घुँट-घुँटकर जीती रहूँ ?" [1] इस बात पर मनमोहन कहता है - "तुम समझती क्या हो ? तुम नहीं होगी तो मेरे शनिवार सूने ही जायेंगे ?" [2]

उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट हैं कि अंजनाके सिवाय और भी स्त्रियों के साथ मनमोहन के काम-संबंध थे । वह अपने ऑफिस के काम के बहाने घर से बाहर रहकर काम-तृप्ति करता था । इनमें अंजना के अलावा वंदना और कल्पना जैसी अनेक महिलाएँ मनमोहन की काम वासना का शिकार बनी ।

---

1. *सुरेंद्र वर्मा - द्रौपदी, पृष्ठ - 95*
2. *सुरेंद्र वर्मा - द्रौपदी, पृष्ठ - 96*

5.5.3.2 पत्नी के विवाहेतर काम-संबंध :

आज-कल स्त्रियाँ भी विवाहेतर यौन-संबंध रखने में पीछे नहीं हैं । पति के होते हुए भी पत्नियाँ परपुरुष के साथ यौन-संबंध रखती हैं । इसके कारण भी अलग-अलग होते हैं । आनंद प्राप्ति के लिए, भौतिक सुख-सुविधाओं के लिए या पति के वलीव होनेपर तथा वृद्ध पुरुष के साथ शादी होने पर यौन-तृप्ति न होने के कारण स्त्री परपुरुष के संसर्ग में आ जाती हैं ।

अपने पति से संतान न होने पर भी संतानोत्पत्ति के लिए भी स्त्री परपुरुष का सहारा लेती हैं । डॉ. वीरेंद्र सक्सेना ने इस कामसंबंध के बारे में कहा है - "स्त्रियाँ रूप को नहीं देखती, वे आयु का भी ध्यान रखतीं, सुरुप हो या कुरूप, स्त्रियाँ पुरुष मात्र का अभिगमन करती हैं । अन्य पुरुषों के प्रति कामना रखनेवाली होने से चंचल स्वभाव के कारण, नैसर्गिक रूप से स्नेह शून्य होने के कारण पत्नियाँ अपने पतियों के प्रति सच्ची नहीं रहती; भले ही उनकी कितनी ही रक्षा क्यों न की जाए ।" [1] महाभारत के द्रौपदी के उदाहरण से हमें इस बात का आभास भी मिलता है कि - "स्त्री यदि चाहें, तो एक ही समय में कई पुरुषों के साथ काम-संबंध स्थापित कर सकती है तथा उनसे एक समान प्रेम भी कर सकती हैं ।" [2] सुरेंद्र वर्मा ने अपने 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' नाटक कं अंतर्गत पत्नी के विवाहेतर काम-संबअंधों को एक अभिनव प्रयोग के रूप में दर्शाने का प्रयास किया है ।

प्रस्तुत नाटक में शीलवती को नियोग विधि के लिए ग्राह्य ठहराया जाता है । शीलवती जाते समय राज्य की धर्मनटी के रूप में जाती है और लौटते समय एक सामान्य स्त्री के रूप में कामनटी बनकर। वैवाहिक स्त्री की शोभा लज्जा होती है और जब वह निर्लज्ज हो जाती है तब शीलवती की तरह आचरण करने लगती है । यहाँ शीलवती मर्यादा की सीमाओं को तोडकर महामात्य से कहती हैं, - "(विद्रूप से) महामात्य ! इन खोखले शब्दों का जादू टूट चुका है अब ! .... (महामात्य, राजपुरोहित, महाबलाधिकृत एवं ओक्काक की ओर बारी - बारी से देखती है ।) मर्यादा ! ... धर्म ! ... शील ! ... वैवाहिक बंधन ! (सब की ओर पीठ कर आगे आ जाती है ।) सब मिथ्या ! .. सब आडंबर ! ... सब पुस्तकीय ! ... (उद्धत सी) लेकिन मुझे पुस्तक नहीं जीना अब । .. मुझे जीवन जीना है ।"3 अत: शीलवती गर्भनिरोधक औषधि खा लेती है जिससे पुन: दो-बार और सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की

---

1. *डॉ. विरेंद्र सक्सेना - काम संबंधों का यथार्थ और समकालीन हिंदी कहानी, पृष्ठ 10*
2. *डॉ. विरेंद्र सक्सेना - काम संबंधों का यथार्थ और समकालीन हिंदी कहानी, पृष्ठ 9*
3. *सुरेंद वर्मा - सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, पृष्ठ 51*

पहली किरण तक परपुरष के साथ रति-क्रीडा का आनंद ले सकें । यहाँ प्रस्तुत नाटक में विवाहेतर काम संबंध का उद्देश्य सिर्फ आनंदप्राप्ति ही माना है ।

प्रस्तुत नाटक में शीलवती को मातृत्व प्राप्ति के लिए भेजा गया था लेकिन उसने मातृत्व को गौण स्थान दिया और पुरुष के साथ संयोग को प्रथम स्थान । शीलवती के कथन द्वारा यह बात साफ रूप में स्पष्ट होती है - "... नारित्व की सार्थकता मातृत्व में नहीं है, महामात्य ! है केवल पुरुष से संयोग के इस सुख में ... मातृत्व केवल एक गौण उत्पादन है ... जैसे दही से निकलता तो मक्खन है, लेकिन तलछट में थोडी सी छाछ भी बच जाती है .. (संकेत सहित) हम सब छाछ है ... छाछ ... ।"[1]

इस प्रकार सुरेंद्र वर्मा ने प्रस्तुत नाटक के जरिए पत्नी के विवाहेतर काम संबंधों को शीलवती के माध्यम से स्पष्ट करने का प्रयास किया है ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि विवेच्य नाटकों में विवाहेतर काम-संबंधों का मनोवैज्ञानिक रूप से यथार्थ का चित्रण किया है जिसे स्वाभाविक कहना होगा ।

5.5.4 उन्मुक्त प्रेम संबंध :

वर्तमानकालीन जीवन में उन्मुक्त प्रेमसंबंधों के उदाहरण सर्वत्र दिखायी देते हैं । प्रस्तुत प्रेम संबंध में प्रेमी युगल घर, रिश्ते, नातों के बारे में कुछ भी सोचतें नहीं ये होने वाले परिणामों को भी झेलते हैं । लेकिन इसमें किसी एक की बलि अवश्य दिखायी देती हैं और यह उन्मुक्त प्रेम असफलता की कगार पर पहुँचता है । नाटककार सुरेंद्र वर्मा ने ऐसा ही एक प्रयास अपने 'सेतुबंध' नाटक के जरिए किया है ।

प्रस्तुत नाटक का कथानक और पात्र भी ऐतिहासिक है, लेकिन उसका संदर्भ वर्तमानकालीन दिखायी देता है । प्रवर सेन एवं प्रभावती, दोनों इस पीढी का प्रतिनिधित्व करते नजर आ रहे हैं । प्रवरसेन आधुनिक युवा पीढी का प्रतिनिधित्व करता है जो अपनी माँ के प्रेम प्रसंगों की चर्चा उसके सामने करना धृष्टता नहीं समझता है । प्रवरसेन अपनी माँ के प्रेम-संबंधों को इसलिए अनुचित मानता है क्योंकि वह उसकी माँ है, जिसके साथ पवित्रता का भा जुडा हुआ है । इस संदर्भ में माँ-बेटे का वार्तालाप दृष्टव्य है -

---

1. *सुरेंद वर्मा - सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, पृष्ठ 52*

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY

"प्रभावती : (मृदू स्वर में) माँ हूँ लेकिन स्त्री भी तो हूँ क्योंकि माँ हूँ इसलिए स्त्री होने का अधिकार .... (करूण मुस्कान से) नहीं, विवशता .... छीन जाएगी ?

प्रवरसेन : (तीव्र स्वर में) लेकिन तुमने वैवाहिक मर्यादा का उल्लंघन किया है । पति के होते हुए पर-पुरुष को चाहना ...

प्रभावती : परंपरागत शब्दों को छोड दो । क्या कोई स्थिति ऐसी नहीं हो सकती, जिसमें परपुरुष पति बन जाए, और पति परपुरुष ?" [1]

यहाँ चंद्रगुप्त की हटवादिता के कारण प्रभावती अपने प्रेमी कालिदास से विवाह तो न कर सकी, किंतु अपने जीवन पर्यंत कालिदास को अपने हृदय से परे नहीं किया । इस तथ्य की पुष्टि प्रभावती के इस कथन से होती है - "मेरी भावना आज तक कुमारी है, मैं माँ बनी हूँ, लेकिन पत्नी नहीं ।" [2]

डॉ. सुंदरलाल कथूरिया ने 'सेतुबंध' को नारी के काममनोविज्ञान का नाटक संबोधित करते हुए लिखा हैं - "इस मनोवैज्ञानिक नाटक में सुरेंद्र वर्मा ने नारी-जीवन की विवशता, परवशता, दैन्य और नारी -मनाविज्ञान का अच्छा उद्‌घाटन किया है ।" [3]

स्पष्ट है कि प्रस्तुत नाटक आधुनिक नारी के उन्मुक्त प्रेम संबंधों को तो निश्चित करता ही हैं, साथ ही यह भी व्यंजित करता है कि आरोपित नारी के लिए पति, पति न होकर परपुरुष है, जिसे वह नैतिक - सामाजिक मूल्यों के कारण झेलती तो है, लेकिन मन से कभी स्वीकार नहीं करती ।

5.5.6 समाजमान्य विवाहेतर काम-संबंध :

पुरुष ने पत्नी के अतिरिक्त काम-संबंधों की पूर्ति के लिए नारी को उपपत्नी, प्रेमिका के रूप में अवश्य ही अपनाया हो, लेकिन समाज उसे अपनी मान्यता नहीं देता । लेकिन कुछ ऐसे भी प्रसंग आते हैं जिनके कारण समाज को पति के होते हुए भी पत्नी को किसी दूसरे पुरुष के साथ अपने काम-संबंध बनाए रखने के लिए मान्यता देनी पडती है । इतिहास में ऐसी अनेक महिलाएँ अवश्य मिलेंगी जिनके एक साथ

---

1. *सुरेंद वर्मा - सेतुबंध, पृष्ठ 31*
2. *सुरेंद वर्मा - सेतुबंध, पृष्ठ 35*
3. *डॉ. सुंदरलाल कथूरिया - समसामायिक हिंदी नाटक : बहुआयामी व्यक्तित्व, पृष्ठ - 77*

कई पुरुषों से संबंध थे । उदाहरण के लिए महाभारत की कुंती, द्रौपदी आदि । लेकिन इन स्त्रियों के काम संबंधों को समाज बुरी दृष्टि से नहीं देखता । सुरेंद्र वर्मा का 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' नाटक इसी आधार पर चलता है ।

प्रस्तुत नाटक में ऐतिहासिक कथानक माध्यम से नाटककार ने नपुंसकता के कारण दांपत्य जीवन में उत्पन्न होनेवाली घुटन, खीज एवं पति की असहाय अवस्था का समसामायिक धरातल पर चित्रण किया है । नपुसंक होने के कारण राजा ओक्काक राज्य को उत्तराधिकारी देने में असमर्थ रहता है, तब पति-पत्नी की इच्छा के विपरीत अमात्य - परिषद या उस राज्य का मंत्रीमंडल रानी शीलवती को नियोग के द्वारा उत्तराधिकारी देने का आदेश देता है । यहाँ राज्य का मंत्रीमंडल पूरे नगर कें प्रत्येक से नागरिक को आवाहन करता है कि - "मल्लराज के हर नागरिक को .. सूचना दी जाती है .. कि आजसे ठीक एक सप्ताह बाद ... पूर्णमासी की संध्या को ... राजमहिषी शीलवती ... धर्मनटी बनकर ... राजप्रांगण में उतरेंगी । मल्लराज्य के हर नागरिक को ... प्रत्याशी बनकर ... पधारने का आमंत्रण हैं । राजमहिषी शीलवती ... अपनी इच्छा के अनुसार ... किसी भी नागरिक को ... एक रात के लिए सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक ... उपपति के रूप में चुनेंगी ।" 1

यहाँ समाज की मान्यता होते हुए भी शीलवती अपना पावित्र्य बचाने हेतु इन्कार करने लगती है । पहले-पहल शीलवती का इसे साफ विरोध होता है । लेकिन समाज और मंत्री मंडल के आगे उसे झुकना ही पडता है । स्वीकृति देने के बाद भी उसके कथन द्वारा उसकी नाराजगी और विरोध स्पष्ट रूप में दिखायी देता है - "समझ में नहीं आता ... क्या करूँ, और क्या न करूँ ... ? (रूककर कुछ अंतर्मुखसी) सोचती हूँ और काँप जाती हूँ । ... एक अनजाना भवन ... उस भवन का शयनकक्ष ... उस शयनकक्ष की शैय्या ... उस शैय्या पर ... (विराम । करूण मुस्कार से) वेश्याओं के मनोबल की जितनी सराहना की जाए, कम है । ××× (हिचकिचाते हुए) लेकिन फिर भी ... यह बहुत कठिन है कि ... । एक स्त्री की दृष्टि से आप नहीं देख सकते । ... बिलकुल अजनबी पुरुष के साथ ... ।" 2

इस प्रकार शीलवती परपुरुष के साथ काम संबंध रखने में संकोच, घुटन, खीज महसूस करती हैं । लेकिन जब राज प्रांगण में उसके उतरने के बाद उसका वाग्दत प्रेमी आचार्य प्रतोष से उसकी भेंट होती है तब वह उसी को अपना उपपति चुन लेती है । सारे संस्कारों के जाल, जीवन मूल्य और सीमाओं को छिन्न-

---

1. *सुरेंद वर्मा - सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, पृष्ठ - 25*
2. *सुरेंद वर्मा - सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, पृष्ठ - 28-29*

छिन्न कर संपूर्ण मनोबल के साथ नियोग के लिए प्रतोष के पास जाती है, तब प्रतोष उसे बिना स्पर्ष किए "जैसी आयी हो बिल्कुल वैसी ही वापस जाओ ।"[1] ऐसा आदेश देता है । तब शीलवती को यह असह्य हो जाता है । वह विव्हल होकर कहती है - "नहीं ... तुम मुझे इतना कठोर दंड नहीं दे सकते , मेरे साथ इतना बडा अन्याय नहीं कर सकते(झुककर घुटनों के बल बैठ जाती है । उसके दोनों पैर अपनी बाहों में घेर लेती है, घुटनों से सिर टिका देती है ।) तुम नहीं जानते मैंने कितनी यातना सही है ।"3

प्रस्तुत कथन से ज्ञात होता है कि शीलवती अपनी अतृप्त यौनांकाक्षा के तृप्त होने के इस सुनहरे अवसर को खोना नहीं चाहती । वह प्रतोष में काम-चेतना जगाने के लिए अपने कपोल एवं अधरों से उसके सीने को स्पर्श करती हैं । निम्नांकित प्रसंग एवं संवादों द्वारा नाटककार ने प्रतोष और शीलवती के काम-संबंधों को मंचपर दर्शाने का प्रयास किया है । जैसे -

"(मंचपर अंधकार --- साँसे, हल्की कुनमुनाहट --- बालों की सरसराहट, आभूषणों की झंकार, जैसे करवट बदल गयी हो । शीलवती और प्रतोष के स्वरों में तंद्रा और तृप्ति की छुअन है ।)

प्रतोष : कुछ बोलो ----?

शीलवती : ऊं हूं ----- ।

विराम ।

प्रतोष : दीप जला दूँ ---- ?

शीलवती : नई --- सब कुछ बदल जाता है प्रकाश के साथ --- । विराम । चषक में मदिरा डाले जाने की ध्वनि ।

प्रतोष : आधी रात बीत गयी ----- ।

शीलवती : (सजग होकर) कैसे कठोर वचन बोलतें हों ।

प्रतोष : क्यों ? क्या हुआ ?

शीलवती : (फिर उसी स्वर में) यह कहो कि आधी रात ---- और बची है --- ।

हँसी । वस्त्रों की सरसराहट । आभूषणों की झंकार ।

विराम ।

प्रतोष : नींद आ रही है --- ?

शीलवती : नींद ? ---- (हँसी) आज की रात तो मुझे मृत्यु भी नहीं आयेगी ---- ।"1

उपर्युक्त प्रसंग अंधकार में घटित हो रहा है लेकिन इन दो पात्रों का वार्तालाप, साँसों की तीव्रता, वस्त्र एवं आभूषणों की आवाज से मंचपर क्या हो रहा है इसकी दर्शकों को सहज अनुभूति हो जाती हैं। शीलवती एवं प्रतोष के काम-संबंध उपर्युक्त वार्तालाप द्वारा स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। प्रस्तुत काम-संबंध पूर्ण रूप से विवाहेतर हैं, लेकिन समाज ने उसे अपने राज्य की भलाई के लिए मान्यता प्रदान की है। यही काम-संबंध समाज मान्य विवाहेतर काम-संबंध हैं। वर्माजी ने इसका चित्रण मनोवैज्ञानिक आधार पर किंतु यथार्थ रूप में किया हुआ परिलक्षित होता है।

निष्कर्ष :-

प्रस्तुत अध्ययन के उपरांत हम इस निष्कर्ष पर पहूँचे हैं कि स्त्री-पुरूष संबंधों का चित्रण वर्तमान काल की एक नाट्य रूढ़ि ही बन गयी है। सुरेंद्र वर्मा ने अपने नाटकों द्वारा इन संबंधों का निरूपन व्यावसायिक धरातल पर किया हैं। स्पष्टत: उनकी दृष्टि से वर्तमान परिवेश में प्रेम शारीरिक आवश्यकता से अधिक कुछ नही हैं। अत: नाटककार ने स्वच्छंद यौन-संबंधों की वकालत करते हुए विवाह संस्थापर प्रश्नचिन्ह लगाया हैं 'द्रौपदी' नाटक के द्वारा खून के रिश्ते को नकार कर प्रेम संबंधों और उन संबंधों की वैवाहिक परिणति का समर्थन भी हुआ है। प्रस्तुत नाटक द्वारा नाटककार ने समाज की उस विकृति को साकार रूप प्रदान किया है जो पाश्चात्य सभ्यता के अनुकरण से हमारे समाज को दूषित कर रही है।

काम मनोविज्ञान नर-नारी की यौन-तृप्ति का समर्थक है, साथ ही यह भी मानता है कि वर्जनाओं के रहनेपर नर-नारी अतृप्त यौनांकाक्षाओं की तृप्ति उन्मुक्त रूप से करते हैं। पति के पौरूष्यहीन होने पर अन्य व्यक्ति से यौन-संबंध स्थापित करना नारी की मनोवैज्ञानिक -शारीरिक अनिवार्यता बन जाती है। इस तथ्य की परिणिति 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' में हुयी है। स्त्री-पुरूष संबंधों की रीढ़ की हड्डी उनके काम-संबंधों की संतुष्टि है, अन्यथा पारिवारिक जीवन में अंतरिक संघर्ष, उत्तेजना, एवं झुंझलाहट व्याप्त हो जाती है, जिसे नाटककार ने विवाहेतर काम-संबंधों के जरिए स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

उचित समय पर विवाह न होनेपर और जिसे चाहा उसके साथ न होनेपर नारियाँ किस प्रकार मनोरोगों से ग्रस्त हो जाती हैं इस का चित्रण उन्मुक्त प्रेम-संबंध के द्वारा 'सेतुबंध' नाटक में सफल प्रयास किया है।

आर्थिक दबाव के कारण मध्यमवर्गीय नारी आज अर्थोपार्जन के लिए विवश है । आज उसे अनेक पुरूषों के सम्पर्क में आना पडता है । अपने पद और प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए अपने बॉस या अधिकारी की यौन तृप्ति उसकी विवशता बन जाती है । इस कटु यथार्थ का चित्रण 'द्रौपदी' के अंतर्गत मिलता है ।

अत: स्पष्ट है कि सुरेंद्र वर्मा ने अपने नाटकों में स्त्री-पुरूष संबंधों का खुलकर चित्रण किया है । उन्होंने प्राय: प्रत्येक नाटक में इस प्रकार के चित्रण के लिए अवसर दे दिया है । कहना गलत नहीं होगा कि पश्चिम के इस आयातित दर्शन के फल स्वरूप उन्मुक्त यौन संबंधों का दर्शन उनके नाटकों में पर्याप्त मात्रा में दृष्टिगोचर होता है ।

इस प्रकार सुरेंद्र वर्मा के प्रत्येक नाटक में किसी-न-किसी बहाने 'काम' को चित्रित किया है । उनके सभी नाटकों का अभिनय सूत्र 'काम' का चित्रण ही हैं । 'काम' सब का प्रिय विषय होने और समाज में खुलकर काम दर्शन होने की वजह से उनके नाटको में काम-संबंध का चित्रण अधिक मात्रा में दृष्टिगोचर होता हैं । वर्तमान समाज में जो स्त्री-पुरूष काम-संबंधी परिवर्तन आता जा रहा है उसी का प्रतिबिंब वर्माजी के नाटकों में प्राप्त होता हैं, जिसे सच्चाई, मनोवैज्ञानिकता और यथार्थता से प्रस्तुत किया गया हैं ।